ISBN 81-237-3543-X

पहला संस्करण : 1982
छठी आवृत्ति : 2001 (*शक* 1923)

Adventures of a Wildlife Warden (*Hindi*)
रु. 10.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए 5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित

नेहरू बाल पुस्तकालय

एक वन्यजंतु वार्डन के साहसिक कारनामे

ई. आर. सी. दावेदार

अनुवाद
सुरेश उनियाल

चित्रकार
शेखर

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया



शिकार चोरों से मुकाबला

एक ऊंची पर्वत श्रृंखला के निचले भाग में कूकल वन्यजंतु मृगवन है। थोड़ा-सा तराई, कुछ पाद गिरि तथा थोड़ा-सा समतल भाग—कुल मिलाकर यह है मृगवन। यह काफी घना वन प्रदेश है और कई तरह के वन्यजंतु वहां आसरा पा रहे हैं। कूकल आमतौर पर हरा, अंधेरा और ठंडा बना रहता था, सिर्फ गर्मियों में यह थोड़ा गर्म और सूखा हो जाता था। साल बीतते गये और यह अधिक और अधिक गर्म होने लगा, सूखने लगा। एक बार इतनी गर्मी पड़ी कि सूखा पड़ने लगा, कूकल में ही नहीं, आसपास के सभी क्षेत्रों में भी। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

जंगल की नदी नेल्ली ओडाई मृगवन के बीच से गुजरती थी। वह सूख गई। जहां तक लोगों को मालूम है ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। उस नदी की

रेत में बने पोखरों और डबरों में पानी इकट्ठा हो गया। जल्दी ही एक-एक करके ये भी सूखने लगे और अंत में दो गहरे पोखर ही बचे रह गये थे। मृगवन में रहने वाली जनजातियों ने मछलियों की दावतें उड़ायीं क्योंकि सूखती हुई नदी में से उन्हें पकड़ना बहुत सरल था। लेकिन दावतें उड़ाते हुए भी वे चिंतित थे। वे जानते थे कि आने वाले सालों में पकड़ने के लिए वहां मछलियां नहीं होंगी।

पानी का एकमात्र स्रोत वह जंगल की नदी ही नहीं थी। आसपास कुछ चश्मों से बने पोखर भी थे। एक के बाद एक वे भी सूखते गये। इनमें से सिर्फ एक, सेनबागा ओरानी में ही पानी बचा रह गया था। यह पोखर सबसे बड़ा और गहरा था।

कूकल में सूखा क्यों पड़ा जानना कोई मुश्किल नहीं था। लकड़ी की कीमत बहुत बढ़ गई थी। इसलिए तेजी से पैसा बनाने के लिए पहाड़ों के भूपतियों ने अपनी जमीनों के पेड़ों को काटना शुरू कर दिया था। सरकारी जमीन में लगे पेड़ों को भी लोग बेरहमी से चोरी-चोरी काटने लगे। परिणाम यह हुआ कि जिस जंगल के कारण वर्षा होती थी वही नहीं रहा इसलिए नाम को भी वर्षा नहीं हुई।

पेड़ों की जड़ें पहाड़ों के किनारों की मिट्टी को पकड़े रहती हैं। जंगलों के समाप्त होने के साथ ही बरसात में मिट्टी को बहने से रोकने के लिए कुछ भी नहीं रह गया था। स्थिति और खराब तब हुई जब, वनों के कटने के बाद जिन किसानों ने जमीनें लीं उन्होंने अपनी जमीन का क्षरण रोकने पर ध्यान ही नहीं दिया। फल यह हुआ कि जब भी वर्षा हुई, काफी बड़ी मात्रा में मिट्टी आकर मृगवन के इन पोखरों में भर गयी।

जंगल स्पंज का काम भी करते हैं। वे वर्षा के पानी को सोख लेते हैं और फिर धीरे-धीरे उसे छोड़ते हैं, इससे चश्मों का जन्म होता है जो वर्षा के रुकने के काफी बाद तक पानी देते रहते हैं। ऊपर के जंगलों के कटने से कूकल जंगल की नदी और स्रोतों को पानी देने वाले चश्मों पर भी प्रभाव पड़ा।

वनों का अनाच्छादन तथा मिट्टी का क्षरण एक ही दिन या एक ही साल में नहीं हुआ। यह कई सालों में हुआ है। इसलिए किसी ने ध्यान नहीं दिया। पर नुकसान तो हो गया था। और फल यह हुआ कि उस क्षेत्र को भयानक सूखे का सामना करना पड़ा। ज्यादा खतरनाक बात यह हुई कि सूखे की धमकी हर वर्ष ही मिलने लगी।

इससे मृगवन के वन्यजंतुओं को सबसे अधिक कष्ट भोगने पड़े। हरिण आदि सबसे अधिक प्रभावित थे क्योंकि उन्हें पानी के गड्ढों के निकट ही रहना पड़ता था। चीतों, लकड़बग्घों तथा जंगली कुत्तों के झुंडों को उनका शिकार करना अपेक्षाकृत अधिक सरल लगा।

मृगवन का प्रभारी, वन्यजंतु वार्डन चंद्रन चिंतित था। वन्यजंतुओं की आदतों को सुरक्षा प्रदान करना ही उसका पहला कर्तव्य था, चाहे वे पशु हों, पक्षी या वृक्ष।

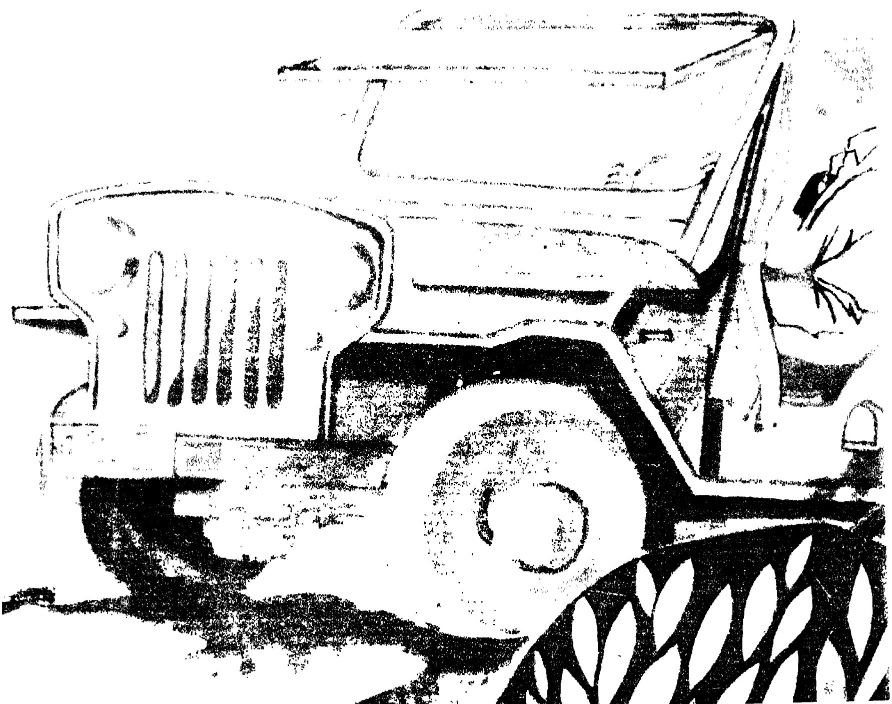
उसने मृगवन के वन्यजंतुओं की इस दुर्दशा के बारे में सरकार तथा वनमंत्री को लिखा। उसने पहाड़ों पर वनों के और कटान को रोकने और जहां भी संभव हो ढलानों पर वन लगाने के लिए उनसे प्रार्थना की। उसने आगाह किया कि यदि एकदम ऐसा नहीं किया गया तो कुछ समय बाद कूकल मृगवन नहीं रह पायेगा। सूखे ने सचमुच उसकी लड़ाई में उसका साथ दिया। मृगवन को वन्यजंतुओं का एक सुखी घर बनाने के लिए वह जो कर सकता था, उसने किया।

2

गर्मियां वन्यजंतु वार्डन चंद्रन के लिए हमेशा परीक्षा काल होतीं। और फिर सूखे ने तो स्थिति को और कठिन बना दिया था।

मृगवन में सीमित जलस्रोतों ने शिकार-चोरों को आकर्षित किया। शिकार-चोरी एक बहुत बुरा काम है। लेकिन अपनी प्यास बुझाने के लिए आने वाले प्यासे पशुओं पर गोली चलाना केवल अपराध ही नहीं है





शर्मनाक काम भी है। लेकिन शिकार-चोर को इस बात से क्या मतलब कि वह अनुचित और अशोभनीय काम कर रहा है। उसका काम तो शिकार करना था और जितने अधिक पशुओं को वह गोली मारता उतना ही वह खुश होता। उसे पकड़कर दंड देना और पाठ पढ़ाना चाहिए।

शिकार-चोरी को रोकने के लिए वार्डन ने कई सावधानियां बरतीं। जो भी शिकार-चोरी करते हुए या पशुओं को मारता हुआ पकड़ा गया, उसने उसे गिरफ्तार कर लिया। चंद्रन एक बहादुर वार्डन था। वह जब-तब जंगल में घूमता रहता, कभी जीप से और कभी पैदल ही। एक शाम को जब वह जीप से गश्त लगा रहा था, उसे कुछ दूरी पर बंदूक चलने की आवाज सुनाई दी। वह शेनबागा ओरानी की दिशा से आया। यह जगह रास्ते से हटकर काफी अंदर थी। चंद्रन को विश्वास था कि कोई शिकार-चोर अपने काम में लगा है।



वन्यजंतु वार्डन ने सीमा पर गश्त बढ़ा दी थी, फिर भी शिकार-चोर घुस ही आते हैं। वार्डन ने सोचा कि भविष्य में शिकार-चोरों को पकड़ने के लिए पोखरों के आसपास जाल बिछाना सबसे अच्छी योजना होगी।

अगले दिन उसने अपने गार्डों और चौकीदारों के तीन दल बनाये। दो को दो वनपालों के नेतृत्व में नदी के दोनों पोखरों पर भेज दिया। उसके नेतृत्व में तीसरे दल में थे वन्यजंतु गार्ड राजू, अलागिरी और उसका जवान बेटा मोहन। वे शेनबागा ओरानी की ओर चल पड़े। मोहन छुट्टियों में स्कूल से घर आया था और उसने अपने पिता से प्रार्थना की थी कि उसे भी दल के साथ जाने दिया जाय। उसके पिता ने काफी खिन्न होकर उसे अनुमति दी थी।

पोखर तक की आधी दूरी पार करने के बाद चंद्रन ने छोटे रास्ते से जाने का निर्णय लिया। यह रास्ता एक गहरी और संकरी घाटी में से गुजरता था जिस पर घने बांस उगे हुए थे। घाटी काफी अंधेरी थी और वे अधिक दूर तक नहीं देख पा रहे थे। यह एक असुरक्षित स्थान माना जाता था। आमतौर पर हाथी यहां पर बांस चरने के लिए आते थे और दिन की गर्मी से बचने के लिए यहीं आराम करते थे।

वार्डन को खतरे की जानकारी थी और उसने अपने आदमियों से सावधानी से आगे बढ़ने के लिए कह दिया था। हवा अनुकूल थी। वह उनके चेहरों की ओर आ रही थी। इस प्रकार मानवगंध को यह पशुओं तक पहुंचने से रोक रही थी। चंद्रन को सिर्फ अकेले नर हाथी से डर था। हाथियों के दल अक्सर काफी शोर मचाते हैं। पर अकेला नर हाथी चुप और चौकस रहता है। कई नर हाथी अपने दल से निकाल दिये जाते हैं क्योंकि उसमें उनसे अधिक शक्तिशाली नर हाथी होते हैं। कुछ बूढ़े होने के कारण एकांत पसंद हो जाते हैं। कुछ युवा हाथी अपने दल के अनुशासन से बचने के लिए अस्थायी तौर पर अपना दल छोड़ देते हैं। साधारणतया अकेले हाथी तुनक-मिजाज और आक्रामक होते हैं और आदमियों को नापसंद करते हैं।

चंद्रन और उसका दल बार-बार रुकते, आहट लेते और फिर आगे

बढ़ते। बालक मोहन सबसे पीछे था कि कहीं उन्हें तेजी से भागना पड़े। चिड़ियों की यदा-कदा चहचहाहट, बांसों की 'सर् सर्' तथा झींगुरों की झंकार के अलावा घाटी में और कोई आवाज नहीं थी। वह दल अब रास्ते के एक तीखे मोड़ पर आ पहुंचा था। अचानक, रास्ते के बीच में एक भयंकर तिरछे दांत वाला हाथी खड़ा था। उसका नाम तिरछे दांत वाला हाथी इसलिए पड़ा क्योंकि उसके दांत समानांतर होने के वजाय तिरछे थे और एक दूसरे के ऊपर चढ़े हुए थे और वह खतरनाक लग रहा था– खूंखार भी। जैसे ही वे लोग मुड़े और दौड़ने लगे, हाथी ने उन्हें देख लिया। जोर से चिंघाड़ते हुए वह उन पर टूट पड़ा। बहुत डरावना दृश्य था। हाथी राजू के निकट आ पहुंचा। राजू छोटा और मोटा था। वह औरों के बराबर तेज नहीं भाग सकता था। तभी उसकी चमकीले हरे रंग की पगड़ी, जो उसकी वर्दी का ही एक हिस्सा थी नीचे गिर गयी। गिरते ही वह खुल गयी और रास्ते पर पूरी लंबाई



में फेल गयी। हमला करते हाथी को लगा कि यह राजू ही ठोकर खाकर गिर पड़ा है और रास्ते पर बिछ गया है। उस कपड़े को चीथड़े-चीथड़े करने के लिए वह रुका, पूरे समय गुस्से में चीखता ही रहा था। लेकिन जब तक उसे अपनी गलती का पता चलता, चंद्रन और उसका दल दूर चले गये थे।

3

उनका भाग्य अच्छा था और वे बाल-बाल बच गये थे। आश्वस्त होने के बाद कि तिरछे दांत वाला हाथी अब उनका पीछा नहीं कर रहा है, वे आराम करने के लिए रुक गये। चंद्रन जैसे अनुभवी वन अधिकारी के लिए भी यह एक दहलाने वाला अनुभव था। वह अपने बेटे के बारे में चिंतित था। पर मोहन डरा नहीं था। इसके विपरीत वह इस साहसिक कार्य से रोमांचित तथा उत्तेजित महसूस कर रहा था।

''क्या तुम घर जाना चाहते हो'' चंद्रन ने पूछा। पर वह तो आगे बढ़ने के लिए कृतसंकल्प था।

वन्यजंतु वार्डन की योजना दोपहर पूर्व जल्दी शेनबागा ओरानी पहुंचने की थी। उसे आशा थी कि शिकार-चोरों के वहां पहुंचते ही उन्हें पकड़ा जा सकेगा। पर हाथी से अचानक सामना हो जाने के कारण उन्हें देर हो गयी। तो चंद्रन ने अपनी योजना बदल दी। बजाय शिकार-चोरों के लिए





जाल तैयार करने के, उसने उन पर आक्रमण करने की योजना पर काम करने का निर्णय ले लिया। जब वे पोखरे के नज़दीक पहुंचे, उसने अपने आदमियों से फुसफुसाकर छिपने और चुप रहने के लिए कहा। फिर वह खुद झाड़-झंखाड़ में से होता हुआ, हाथों और पैरों से चलता हुआ सावधानी से आगे बढ़ा। सभी जगह गिरी हुई सूखी पत्तियां बिखरी थीं। उसे इस बात का ख्याल रखना था कि इन पर पांव न पड़े क्योंकि इससे वह पकड़ लिया जाता। जब वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचा, जहां से पोखर दिखाई देती थी, तब उसने दूरबीन निकाली और आसपास के पेड़ों की ओर देखने लगा। पोखरे के चारों ओर कई पेड़ थे पर कुछ ठूंठ थे, कुछ पर नयी पत्तियां निकल रही थीं, कुछ इतने बड़े नहीं थे कि उन पर मचान बनाया जा सके। पर एक आम का पेड़ ऐसा था जो बड़ा भी था और घना भी। और इसकी शाखाओं में काफी अधिक आदमी छिप सकते थे। चंद्रन ने इसी पर अपना ध्यान समेटा। काफी मुश्किल से वह इसके ठीक बीच में, जहां यह सबसे अधिक घना था, एक मचान को देख पाया। यह जमीन से लगभग 20 फुट की ऊंचाई पर था। इसे पेड़ का एक हिस्सा दिखाने के लिए मचान को पत्तियों से ढका गया था। काफी ध्यान से देखने पर वन्यजंतु वार्डन को इसकी शाखाओं के बीच में कुछ छेद दिखायी दिये। इनमें से दो में दो बंदूक की नलियां घुसी हुई थीं। शिकार-चोर अच्छी तरह छिपे हुए थे पर बंदूकों ने उनका पता बता दिया था।

चंद्रन खिसकता हुआ वापस अपने आदमियों के पास आया और उन्हें काम करने की अपनी योजना बतायी। लेकिन अलागिरी ने विरोध किया। "आपका अकेले उनके पास पहुंचना खतरनाक होगा, सर।"

राजू का भी वही विचार था, "हम एक साथ उन पर धावा बोलेंगे," उसने सलाह दी।

पर चंद्रन का विचार था कि उसकी योजना ही ठीक है। अपने आदमियों को अपने निर्देशों का पालन करने की आज्ञा देकर वह निडरता से अकेला ही आगे बढ़ गया। मोहन एक पेड़ के पीछे छिपकर अपने पिता को

जाते देखता रहा। यद्यपि वह अपने पिता की सुरक्षा के लिए चिंतित था पर उसे उनके साहस पर गर्व भी हो रहा था।

जब वन्यजंतु वार्डन मचान के पास पहुंचा, उसने देखा कि बंदूकें पीछे हट गयी हैं। वह आम के पेड़ के नीचे रुक गया और शिकार-चोरों को नीचे





आने का हुक्म दिया। "मैं जानता हूं कि तुम वहां हो," उसने कहा। पर वे नहीं हिले। उसने हुक्म को दोहराया।

एक शिकार-चोर ने धृष्टता से जवाब दिया, "आकर हमें पकड़ लो, अगर पकड़ सको तो," और उसने चंद्रन को अपनी बंदूक के निशाने पर ले लिया।

इस पर वार्डन को क्रोध आ गया। उसने जवाब में चिल्लाकर कहा कि वह अकेला नहीं है और शिकार-चोरों को उसके आदमियों ने घेर रखा है। उसका चिल्लाना गार्डों के लिए एक संकेत भी था। वे अपनी सीटियां बजाने लगे। वे जगह बदल बदल कर सीटियां बजा रहे थे ताकि ऐसा लगे कि पोखरे के चारों ओर आदमी हैं। मोहन ने भी अपने छिपने के स्थान से ही अपने पिता की सीटी बजाकर और पत्तियों पर पैर पटक कर मदद करने की कोशिश की। पोखरे के निकट एक झाड़ी में सांभरों का एक झुंड लेटा हुआ था, वह इससे घबरा गया और उस घबराहट में पोखरे के चारों ओर दौड़कर शोर को बढ़ाने लगा था।

शिकार-चोर भी चालाक, धूर्त्त लोग थे। उन्होंने आपस में विचार किया "यदि जंगल में सचमुच इतने सारे लोग हैं तो वे सामने क्यों नहीं आते?"

चंद्रन ने उनके विचारों का अनुमान लगा लिया और इस डर से कि कहीं वे उसके झांसे को समझ न जायें, उसने अपने आदमियों से चिल्लाकर कहा, "जब तक ये लोग नीचे न आ जावें, छिपे रहो। मैं नहीं चाहता कि किसी को चोट पहुंचे।"

इस बात से शिकार-चोरों को विश्वास हो गया कि वे सचमुच वार्डन स्टाफ के काफी लोगों से घिरे हुए हैं। अंत में चंद्रन ने उन्हें धमकाया, "अगर तुम सीधी तरह से नीचे नहीं आते तो तुम्हें लात मारकर बाहर निकालने के लिए मैं ही आता हूं", और वह सीढ़ी पर चढ़ने लगा।

अब शिकार-चोरों का साहस जवाब दे गया था। जब वे पेड़ से नीचे उतरे तो वन्यजंतु वार्डन ने उनसे शस्त्र छीन लिये। तब दो गार्ड तथा मोहन



जंगल में से निकल कर उनके पास आ गये। वे अब तनाव से मुक्त हो गये थे। क्योंकि झांसा सफल हो गया था। दो गार्डों और एक छोटे बच्चे को देखकर शिकार-चोरों ने काफी शर्म महसूस की। अचानक उनमें से एक के मन में



विचार आया कि यदि वे मोहन को कब्जे में कर लें तो वे उसे बंधक बनाकर अब भी भाग सकते हैं। जब मोहन उन लोगों के पास पहुंचा एक शिकार-चोर ने अपना शिकारी चाकू निकाल लिया और मोहन को पकड़ने के लिए कूद पड़ा। पर मोहन के पिता उससे तेज थे। जैसे ही उसने बच्चे को छुआ चंद्रन उनके बीच में आ गया और शक्तिशाली घूंसे के एक प्रहार ने बेचारे को जमीन सुंघा दी। शिकार-चोरों में जो बच निकलने की आशा रह गयी थी, वह भी जल्दी ही दूर हो गयी। किसी और शरारत तथा उन्हें भाग निकलने से रोकने के लिए गार्डों ने शीघ्रता से उन्हें हथकड़ियां लगा दीं। और अब शिकार-चोरो को पुलिस स्टेशन की ओर प्रस्थान करना था।



तिरछे दांतों वाले हाथी की तलाश

उस दिन सुबह वन्यजंतु वार्डन चंद्रन अपने कार्यालय में काम कर रहा था कि तभी एक आदमी बुरी तरह हांफता हुआ दौड़ कर उसकी मेज के पास आया और गिर पड़ा। वह खून से लथपथ था और उसके कपड़े तार-तार हो गये थे। वार्डन एकदम उसके पास आया और उसके घावों को देखने लगा। वे गहरे तो नहीं थे पर जगह-जगह खरोंचें पड़ी हुई थीं। पर वह आदमी बुरी तरह घबराया हुआ था। वरना और तो कुछ गड़बड़ दिख नहीं रहीं थी। जब उसके घावों का इलाज किया जा रहा था, वह होश में आ गया। उसकी घबराहट दूर हुई तो वार्डन ने उससे सारी बातें पूछीं।

उसने बताया कि हमेशा की तरह वह और उसका साथी कूकल के

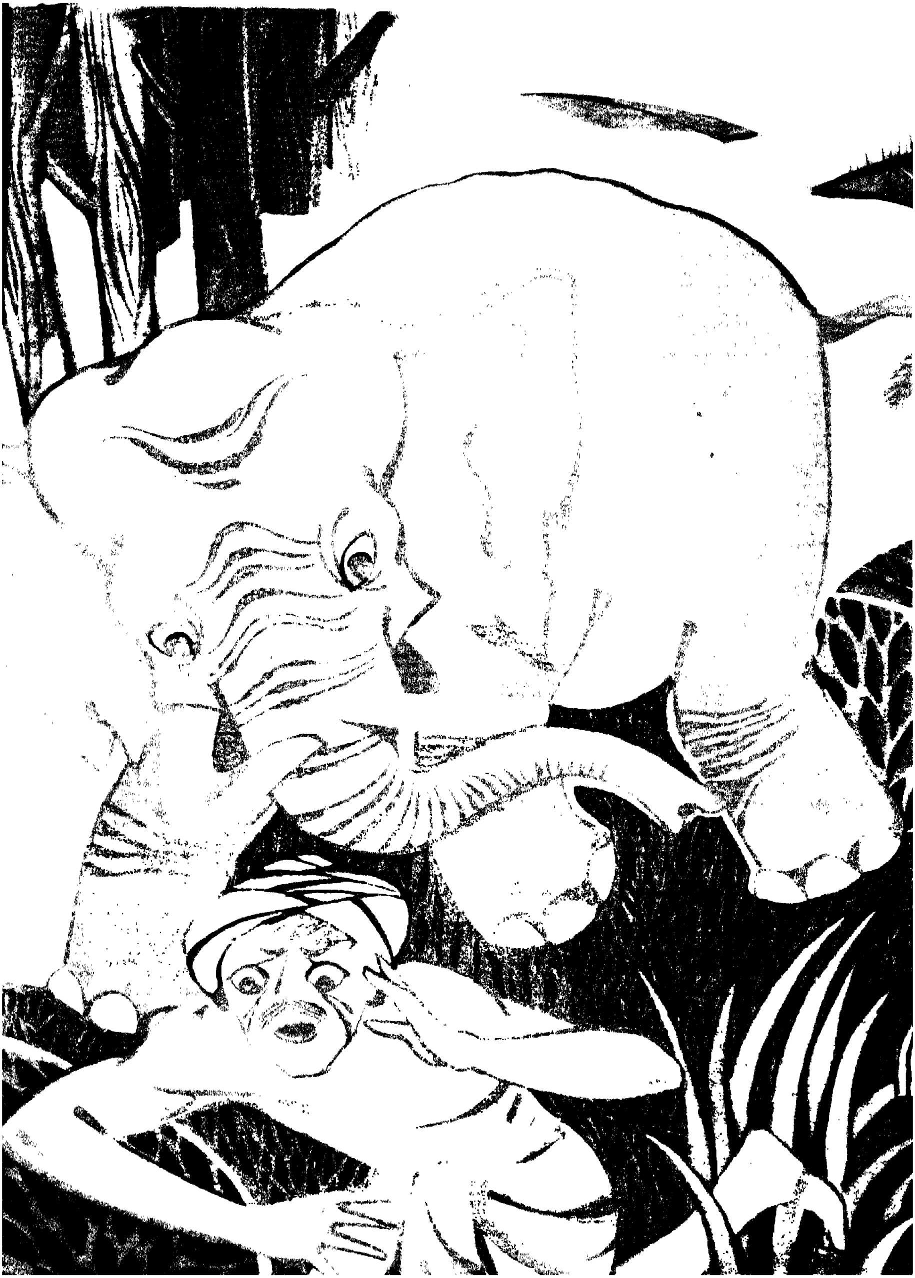


जंगल में सुबह सूखी हुई लकड़ियां बटोरने के लिए गये थे जब वे जंगल की नदी नेल्ली ओडाई के नज़दीक पहुंचे, घनी झाड़ियों से निकल कर एक हाथी ने उन पर हमला कर दिया। वे दोनों दौड़े। हाथी उसके साथी के मुकाबले उसके अधिक नज़दीक था। हाथी जब उसके नज़दीक आया उसे ठोकर लगी और वह गिर पड़ा। उसे लगा कि अंत आ गया है। पर भाग्य से वह एक छिपे हुए गड्ढे में गिरा था। हाथी बिना रुके भागता रहा और उसके साथी को जा दबोचा। उसने उस बेचारे को कुचल कर मार दिया। फिर वह उठा और जंगल में दौड़ने लगा, बिना इस बात को चिंता किये कि कांटों से उसके कपड़े फट गये हैं और खरोंचें पड़ रही हैं। वार्डन के कार्यालय पहुंचने तक वह दौड़ता ही रहा। उसने हत्यारे की पहचान बतायी कि वह तिरछे दांत वाला हाथी था।

वन्यजंतु वार्डन और उसके आदमी लकड़ी इकट्ठा करने वाले के साथ मौत के स्थान पर गये। तिरछे दांत वाला हाथी अभी वहीं था। उसे वहां से भगा कर ही वे लकड़ी इकट्ठा करने वाले की लाश को पा सके।

इस मौत की रपट वार्डन को अपने मुख्य वन्यजंतु वार्डन को देनी थी। इसके लिए पहले उसे खुद यह संतुष्टि कर लेनी थी कि हत्यारा कौन है। लाश के आसपास के पांवों के निशान तिरछे दांत वाले के निशानों से मिलते थे। और फिर वह हाथी उसी क्षेत्र में पाया गया था। इसलिए वार्डन को लकड़ी इकट्ठा करने वाले के इस बयान को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि हत्यारा तिरछे दांत वाला हाथी ही है। उसने रपट लिखी और भेज दी।

मुख्य वन्यजंतु रक्षक को पिछले कुछ समय से तिरछे दांत वाले हाथी के बिगड़ैल व्यवहार की सूचनाएं मिल रही थीं। पर उसने कोई कार्यवाही यह सोचकर नहीं की कि हाथी शायद किसी अस्थायी बीमारी से ग्रस्त है और उसका यह व्यवहार अधिक दिनों के लिए नहीं है। जब वन्यजंतु वार्डन से हाथी द्वारा की जाने वाली ताजी हत्या की सूचना उसे मिली तो उसे लगा कि उसने हाथी को सुधरने के लिए काफी समय दे दिया है और अब वह किसी भी



प्रकार की सहानुभूति का हकदार नहीं है। इसलिए बिना किसी हिचक के उसने तिरछे दांत वाले हाथी को गोली से उड़ा देने के आदेश हेतु राज्य सरकार की सहमति के लिए प्रार्थना भेज दी। यह कार्य उसने वन्य जंतु सुरक्षा अधिनियम की औपचारिकता पूरा करने के लिए किया। इस अधिनियम के अधीन वन्य हाथियों को पूरी सुरक्षा दी जाती है और उन्हें किसी भी तरह हानि नहीं पहुंचायी जा सकती। राज्य सरकार ने और अधिक सुरक्षा की दृष्टि से पशुओं को मृगवन में रखने की सुविधा भी दी है।

अपनी रपट भेजने के बाद वार्डन चंद्रन ने स्थिति पर एक बार फिर विचार किया। इस मृगवन के लिए तिरछे दांत वाला हाथी नया नहीं था और वह जब तब इससे लगे हुए खेतों में भी घुस जाता था। जब कोई फसल न होती या जब गांव वाले उसे बाधा पहुंचाते और हांकते तो हाथी मृगवन में वापस आ जाता। वहां वह बिल्कुल सामान्य व्यवहार करता और प्रत्याक्रमण तभी करता जब लोग उसके बहुत नज़दीक आ जाते या उसे किसी तरह गुस्सा दिलाते। यह भी समझा जा सकता है कि जब यह उनके खेतों में घुसता तो गांव वाले अक्सर उस पर पत्थर, डंडे, पटाखे और जलती हुई लड़ियां फेंकते और कभी-कभी पुरानी कारतूस वाली बंदूकों से गोली भी चलाते। पर इसने कभी किसी को घायल नहीं किया। केवल इसी बार वह लोगों का पीछा करने लगा है। वह कुल मिलाकर तीन व्यक्तियों को मार चुका है, दो को मृगवन से बाहर, यहां आने से जरा पहले और एक लकड़ी इकट्ठा करने वाले को अगले दिन मृगवन में।

"साहब मेरा विचार है कि तिरछे दांत वाले हाथी का यह व्यवहार अपने दांतों की इस विलक्षण बनावट के कारण है", वन्यजंतु वनपाल ने एक दिन गंभीरता से कहा।

"तुम ऐसा कैसे कह सकते हो?" चंद्रन ने पूछा।

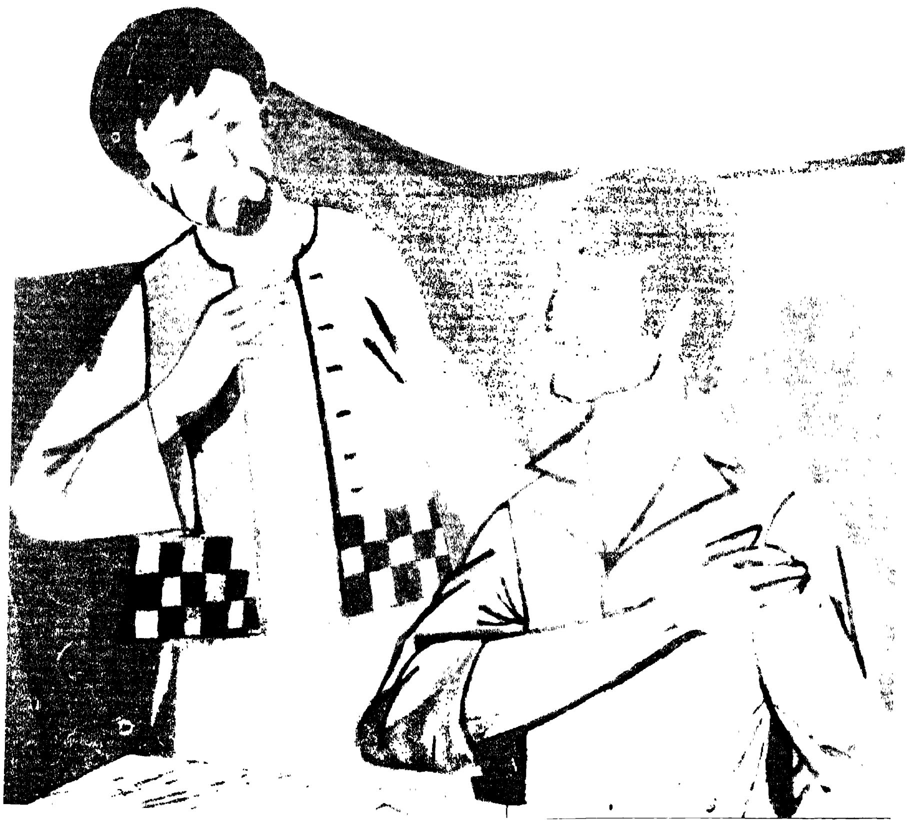
"इसलिए कि, हो सकता है वह और हाथियों की तरह अपनी सूंड का स्वतंत्रतापूर्वक प्रयोग नहीं कर सकता, जिसके कारण उसे चिढ़ और गुस्सा आ जाता हो और गुस्से को वह लोगों पर उतारता हो," मोहिदीन ने जवाब

दिया।

"यदि ऐसी बात होती तो वह बहुत पहले ही लोगों को मारना शुरू कर चुका होता, अब नहीं।"

चंद्रन ने मोहिदीन की बात काट दी थी पर वह चिंतित था।

नर हाथी के बुरे व्यवहार का एक कारण तो उसका कभी-कभी मस्त होना भी बताया गया है। कहा जाता है कि संगम ऋतु में नर हाथी मस्त हो जाता है। मस्त हाथी अक्सर चिड़चिड़ा हो जाता है और जरा-सी बात से उत्तेजित हो जाता है। उसकी इस हालत को आसानी से पहचाना जा सकता है। हाथी के आँख और कान के बीच दोनों और मदग्रंथियां होती है। वे जब खुल जाती हैं तो एक चिपचिपा द्रव बहने लगता है और हाथी के गालों



पर धब्बे से डाल देता है। जब से तिरछे दांत वाले हाथी पर हत्या का यह उन्माद सवार हुआ था, किसी भी वन्यजंतु कर्मचारी ने नज़दीक मे यह नहीं देखा था कि वह मस्त हालत में है या नहीं।

घायल या बीमार हाथी भी बुरा व्यवहार करने लगते हैं, ये अस्थायी कारण हैं। तिरछे दांत वाला हाथी हो सकता है इनमें से ही किसी कारण से हत्यारा बन गया हो।

तिरछे दांत वाले हाथी की अशक्तता अस्थायी है या स्थायी, यह तो समय ही बता सकता है। चंद्रन सभी जानवरों से प्यार करता था और उनके बारे में बहुत चिंतित रहता था। वह तिरछे दांत वाले हाथी को लेकर भी चिंतित था और पूरी तरह से अनुभव कर रहा था कि उस पशु के साथ पूरा न्याय तभी हो सकता है जब उसे समय दिया जाये और उस पर निगाह रखी जाये।

इसलिए उसने मुख्य वन्यजंतु वार्डन के पास एक मामला बनाकर भेजा कि तिरछे दांत वाले हाथी को एक और मौका दिया जाये और उसे मारे जाने के हुक्म से पहले उसने एक हफ्ता मांगा। अब तक तिरछे दांत वाले हाथी को मारे जाने के प्रस्ताव पर सरकार की अनुमति आ गयी थी। मुख्य वन्यजंतु वार्डन चंद्रन के तर्क की गंभीरता से प्रभावित हुआ और उसकी प्रार्थना मानने का फैसला कर लिया। आदेश को एक सप्ताह के लिए रोकने के लिए वह इस शर्त पर तैयार हुआ कि इससे अधिक समय की मोहलत नहीं दी जायेगी।

तिरछे दांत वाले हाथी के लिए एक सप्ताह की माफी मिल जाने पर वार्डन ने महसूस किया कि उसे अधिक समय मांगना चाहिए था। पता नहीं, एक सप्ताह में वह अपनी बात सिद्ध कर भी पायेगा या नहीं। फिर भी, यदि वह अधिक समय मांगता और हाथी फिर अपने उन्माद में निकल पड़ता तो वही इसके लिए जिम्मेदार माना जाता। इसीलिए उसने एक सप्ताह से अधिक समय मांगने का फैसला नहीं किया था। समय कम था और उसे तेजी से काम करना था।

कोई भी अगली योजना बनाने से पहले चंद्रन को उस हत्यारे की गतिविधियों का अध्ययन करना था। जिस दिन उसे मुख्य वन्यजंतु वार्डन का पत्र मिला उसी दिन उसने हाथी का पता लगाने के लिए अपने आदमी भेजे, वहां से तलाश शुरू करवाई जहां उन्होंने उसे अंतिम बार देखा था। तिरछे दांत वाले का पता लगाना कोई समस्या नहीं बनीं, क्योंकि अभी वह मृगवन में ही था। पता लगाने वाले शाम तक वापस आ गए और उसे बता दिया कि हत्यारा कहां मिलेगा।

2

अगली सुबह को चंद्रन अपने बेटे मोहन तथा गार्ड अलागिरी के साथ निकल पड़ा। वह तिरछे दांत वाले का अध्ययन करना चाहता था। दूरबीन के साथ उसने अपनी भारी राइफल भी ले ली, क्या पता कब हाथी हिंसा पर उतर आये। सामान्यतः वह मोहन को साथ न लेता। पर इस समय वह आश्वस्त था कि कूकल के जंगलों के बारे में अपने ज्ञान और वनविद्या के अनुभव के कारण वह हत्यारे हाथी से किसी अप्रत्याशित मुलाकात से बच सकता है।

वार्डन के दल ने काफी दूर से ही हाथी का पता लगा लिया था। वह पहाड़ी ढलान पर चर रहा था। चाहे दूरबीन में ही सही, पर वे उसे दूर रह कर भी भली भांति देख पा रहे थे।

उन्होंने देखा कि हाथी मनचाहे ढंग से अपनी सूंड़ का इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है। पेड़ों की शाखाएं और बांस की डंडियों तक भी वह नहीं पहुंच पा रहा था जिन तक काफी छोटा हाथी भी पहुंच जाता है। छोटे पेड़ों की शाखाओं तक पहुंचने के लिए भी उसे अपना सिर काफी अधिक उठाना पड़ता और इससे उसकी गर्दन पर काफी तनाव पड़ता। कई बार बड़ी कठिनाई से वह अपनी सूंड इस आशा में कि कुछ लाभ होगा, दांतों के ऊपर निकाल लेता। पर उसे निराशा होती कि अब उसके दांत ही सूंड़ के मुहं तक



आने के रास्ते में आ जाते। हाथी अपनी सूंड से कई ऐसे काम न कर पाता जो अन्य हाथी बड़े आराम से कर लेते, जैसे पेड़ों की छाल उतारना आदि। कुल मिलाकर यह उस पशु को कुंठित कर रहा था। शायद इसीलिए वह खेतों में घुस जाता था क्योंकि फसल को पकड़ना और खाना सरल होता है—वार्डन ने सोचा।

दांतों की यह विशेष बनावट वास्तव में उसे पंगु बना रही थी। पर क्या सिर्फ यही उसके आक्रामक व्यवहार का कारण हो सकता है? इसलिए वार्डन ने नज़दीक से देखने का फैसला किया।

गर्मी बढ़ रही थी। ऐसे में हाथी खाना छोड़कर पानी पीना चाहेगा। नेल्ली ओडाई अधिक दूर नहीं थी और वार्डन का अनुमान था कि हाथी इस सूखी नदी के सबसे नज़दीक वाले पोखरे की ओर आ रहा होगा। इससे उसे नज़दीक से देखने का मौका मिल सकता है। उसने गार्ड से सलाह ली और वे दोनों हाथी के संभावित मार्ग के बारे में सहमत हो गये।

वार्डन की अगुआई में तीनों तेजी से और चुपचाप जंगल पार करने लगे। कुछ ही देर बाद वे अपने निश्चित स्थान पर पहुंच गये। वहां पर एक ऊंची चट्टान थी जो किसी भी हाथी की पहुंच से बाहर थी। चट्टान के तीन ओर तो सीधे खड्ड थे और एक ओर जमीन तक तीखी चढ़ाई थी। वे बड़ी मुश्किल से, चट्टान के गड्ढों पर पैर टिकाते हुए ऊपर चढ़े। चट्टान के ऊपर एक गर्त में उगी हुई झाड़ियों में उन्हें छिपने का स्थान मिल गया। वे बैठ गये और इंतजार करने लगे।

उन्हें ज्यादा देर तक इंतजार नहीं करना पड़ा। उन्हें चट्टान के बगल से होकर जाने वाली पगडंडी पर किसी पशु की आहट सुनाई दी। जल्दी ही वह दिखने भी लगा। वह तिरछे दांत वाला हाथी ही था। वह धीरे-धीरे आ रहा था, थोड़ा लंगड़ाता हुआ, लगता था उसे कोई कष्ट है। वे देख रहे थे कि वह मस्त नहीं था। उनके बगल से गुजरते ही हाथी को चट्टान पर कुछ लोगों की गंध मिल गयी। इसकी एकदम प्रतिक्रिया हुई। वह घूमा और हमला बोल दिया। यह देखकर कि लोग उसकी पहुंच से दूर हैं उसने अपना

एक पैर चट्टान पर रख दिया, आगे झुका और दांतों से बाहर निकली अपनी सूंड़ से उन तक पहुंचने की कोशिश करने लगा। चंद्रन और उसके साथियों





के लिए ये चिंता के क्षण थे, अगर कहीं हाथी सफल हो गया तो? पर हाथी सफल नहीं हो पाया। इससे वह और क्रुद्ध हो गया। फिर हाथी गुस्से में चिल्लाता हुआ और अपने रास्ते में आने वाली झाड़ियों को रौंदता हुआ चट्टान के चारों ओर चक्कर लगाने लगा।

मोहन की जगह कोई और बच्चा होता तो गिर ही पड़ता। पर मोहन शांत रहा और गुस्से में बिफरे हाथी को देखता रहा। उसने एक ऐसी चीज देखी जिसकी ओर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। उसकी गर्दन पर एक स्थान पर काफी अधिक सूजन थी। यह स्थान एक कान से काफी ढका हुआ था। उसने अपने पिता का ध्यान इस ओर दिलाया। वार्डन ने एकदम पहचान लिया कि वह एक बंद घाव था जो मवाद से भरा था। उसकी समस्या सुलझ गयी थी। अब कोई शंका नहीं रह गयी थी। तिरछे दांत वाले हाथी के आक्रामक व्यवहार का कारण यह दर्दीला घाव था। दांतों के आकार ने नहीं, उसके दर्द ने उसे हत्यारा बना दिया था। इसके कारण हाथी तेज भी नहीं भाग सकता होगा जिससे इसके कई संभावित शिकार बच भी निकले होंगे। अन्यथा कई अधिक लोग मरे होते।

तिरछे दांतों वाला हाथी अधिक समय तक चट्टान की घेराबंदी न कर पाया। धूप बहुत तेज थी और हाथी थकने लगा था। आखिर में हाथी की प्यास जीत गयी और वह वहां से चला गया।

3

वन्यजंतु वार्डन ने जंगल से वापस लौटते ही अपने मित्र डा. रमेश को एकदम आने के लिए एक एक्सप्रेस टेलीग्राम भेजा। डा. रमेश वन्यजंतु विभाग से संबद्ध एक पशु चिकित्सक अधिकारी था। डा. रमेश अगली ही शाम को पहुंच गया और सीधा चंद्रन के घर ही आया। अक्सर वह चंद्रन के साथ ही ठहरता था। चाय पीते हुए चंद्रन ने रमेश से तिरछे दांत वाले हाथी के बारे में बताया। और फिर उसने डाक्टर के सामने अपनी योजना रखी।

''तुम जानते हो कि हमें एक प्रशांतक बंदूक मिलती है। मेरी योजना है कि मैं इससे तिरछे दांत वाले हाथी पर गोली चलाऊंगा और वह बेहोश होकर गिर जायेगा अगर तुम उसके घाव का ऑपरेशन करने के लिए तैयार हो जाओ तो मैं समझता हूं कि घाव का इलाज हो जाने पर और दर्द तथा पीड़ा से आराम मिल जाने पर हो सकता है वह ठीक हो जाये,'' चंद्रन ने कहा।

डाक्टर हक्का-बक्का रह गया था। यह एक विचित्र निवेदन था। उसने कभी किसी जंगली हाथी का ऑपरेशन नहीं किया था और फिर तिरछे दांत वाला हाथी तो हत्यारा भी था। पर वह जल्दी ही सामान्य हो गया। उसने सावधानी से पूरे मामले पर सोचा। खतरा तो वहां था ही। पर एक नये अभियान का उत्साह भी था। पशु चिकित्सक के मरीज़ अधिकतर वन विभाग के साथ काम करने वाले हाथी ही थे। वह उनसे प्यार करता था। तिरछे दांत वाला हाथी उनसे किस तरह अलग था? उसने सोचा। यह एक हाथी की जीवन रक्षा का अवसर भी था। वह यह भी जानता था कि चंद्रन उसे किसी खतरे में नहीं डालेगा। उसने अपना निर्णय ले लिया। उसने अपने हाथ मेज के पार पहुंचा कर वार्डन से मिलाये, हल्के से हंसा और कहा, ''हां, मैं यह काम करूंगा।''

मोहन यह वार्तालाप सुन रहा था, उसे अभी संदेह था, ''पिताजी, माना तिरछे दांत वाला हाथी उस तरफ गिरा जिस तरफ घाव है तो?''

''बेटे, मैंने यह तो नहीं सोचा था,'' उसके पिता ने स्वीकार किया। ''एक बार अगर वह गिर गया तो हम उसे पलट नहीं सकेंगे। काश, हमारे पास कोई पालतू हाथी होता,'' वह बुदबुदाया।

''मैं सोचता हूं, दोनों ओर से ही घाव तक पहुंच पाना संभव होगा। किसी भी हालत में हमें यह खतरा उठाना ही चाहिए।'' डाक्टर ने गम्भीरता से कहा।

वार्डन ने अपनी प्रशांतक बंदूक निकाल ली। इसे वह 'स्टन गन' कहता था क्योंकि यह अपने शिकार को थोड़ी देर के लिए अचेत कर देती

थी। इसे 'कैप्चर गन' भी कहा जाता है क्योंकि अधिकतर यह पशुओं को पकड़ने के काम आती है। चंद्रन ने इसका उपयोग पहले चित्तीदार हरिणों पर किया था। यह तब की बात है जब उसे मृगवन में बड़ी संख्या में रहने वाले हरिणों क़ो पकड़ने का हुक्म मिला था। इन्हें उस जंगल में भेजना था जहां उनकी संख्या कम थी। उसने इसका प्रयोग पालतू पशुओं पर भी किया था। अपने शिकार पर चोट करने के बाद इसकी गोली में भरी हुई दवाई को यह सुई की सहायता से उसके शरीर में पहुंचा देती है और कुछ देर के लिए अपने शिकार को सुला देती है।

यह जरूरी है कि उस विशेष पशु के लिए प्रत्येक गोली में दवाई की सही खुराक भरी हो। अधिक तेज दवाई से पशु की मृत्यु हो सकती है और हल्की दवाई का असर ही नहीं होगा। जहां तक रसायनों का प्रश्न है, रमेश को इनकी काफी जानकारी थी। उसने और चंद्रन ने औषधियों पर पुस्तकें पढ़ीं और अन्य पशुओं के साथ किए प्रयोगों के अनुभव पर सही मिश्रण तथा खुराक तैयार की। तिरछे दांत वाले हाथी के आकार के पशु के लिए खुराक का काफी तेज और गाढ़ा होना ज़रूरी था। रात का खाना खाने के बाद उन्होंने छः गोलियों में दवाई भरी, बंदूक को साफ किया और उसके खटकों की जांच की। वे अब अभियान के लिए तैयार थे।

4

अगली सुबह, मुख्य वन्यजंतु वार्डन का पत्र मिलने के चार दिन बाद, वन्यजंतु वार्डन और पशुचिकित्सक दो व्यक्तियों के साथ अपने अभियान पर निकल पड़े। एक वन्यजंतु गार्ड ने डाक्टर की दवाइयों का थैला ले लिया। दूसरा गार्ड हाथी का पता लगाने में विशेषज्ञ था। वह मृगवन में रहने वाली पहाड़ी जनजाति का व्यक्ति था। सुबह से देर दोपहर तक वह दल हाथी का पता लगाने में लगा रहा। आखिर उन्होंने उसे देख ही लिया। हाथी घने जंगल से ढकी एक घाटी में चर रहा था।



वार्डन चंद्रन अपनी 'स्टन गन' की सीमाएं जानता था। राइफल से भिन्न इसकी मार की सीमा कम थी। प्रभावशाली मार के लिए निशाने से पच्चीस मीटर के अंदर रहना जरूरी था। और फिर, राइफल की गोली से भिन्न प्रशांतक दवाई का असर भी कुछ देर बाद ही होता था। इसलिए अभियान का समय तथा स्थान भी सावधानी से चुना जाना चाहिए था। जिस घाटी में हाथी चर रहा था वह सामना करने के लिए सही जगह नहीं थी और हवा भी चल रही थी। शिकारी बड़े धैर्य के साथ हाथी के आवरण से बाहर निकलने की प्रतीक्षा करते रहे। पर वह ऐसा करने की जल्दी में नहीं था क्योंकि उसने अभी कुछ ही घंटे पहले पानी पिया था। साथ ही दिन भी तेजी से बढ़ रहा था। शिकारियों ने अपने अभियान को अगले दिन के लिए टालने का फैसला कर ही लिया।

अगले दिन शिकारियों ने अपनी रणनीति बदल दी। वे उसी चट्टान पर आकर बैठ गये जहां वन्यजंतु वार्डन की तिरछे दांत वाले हाथी से पहली जोखिम भरी मुलाकात हुई थी और इस आशा में प्रतीक्षा करने लगे कि वह पशु इसी रास्ते से गुजरेगा। पर हाथी तो नेल्ली ओडाई के दूसरे पोखरे पर चला गया था।

तिरछे दांत वाले हाथी को माफी में मिले एक सप्ताह में से पाँच दिन बीत गये थे और चंद्रन चिंतित था। पर वह प्रतीक्षा करने के अलावा कर भी क्या सकता था। कोई भी दुस्साहसी या जल्दबाजी में उठाया गया कदम मूर्खतापूर्ण सिद्ध हो सकता था। डा. रमेश उसके विचारों को समझ गया और उसे जल्दबाजी में कुछ भी करने के लिए मना किया।

तिरछे दांत वाला हाथी नेल्ली ओडाई क्षेत्र में ही रह रहा था और कोई भी अनुमान लगा सकता था कि वह दो पोखरों में से ही किसी में जायेगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि निचले पोखरे पर ही जाये, जहां वह लेट कर उसकी प्रतीक्षा करेगा, चंद्रन ने ऊपर वाले पोखरे के पेड़ों पर अपने आदमियों को यह आदेश देकर भेज दिया था कि यदि हाथी उस ओर आए तो उसे शोर मचाकर वहां से भगा दें। उसने उन्हें टिन, ढोल तथा पटाखे

दिये। जब तिरछे दांतवाला हाथी उस पोखरे पर आया उन्होंने उसे डराकर भगाने की कोशिश की। पर इसने हाथी को गुस्सा दिला दिया। वह पेड़ों को गिराने के लिए धकेलने लगा। जैसे जैसे वह पोखरे के निकट आता गया, शोर इतना बढ़ गया कि तिरछे दांत वाले हाथी के लिए इसे सहन करना असंभव हो गया। अपने क्रोध का अंतिम प्रदर्शन करने के बाद वह वापस लौट गया।



नेल्ली ओडाई के ऊपरी पोखरे से भगाये जाने के कारण तिरछे दांत वाला हाथी क्रोधित था और प्यासा भी। निचले पोखरे पर घात लगाकर बैठे प्रतीक्षा करते शिकारियों को काफी दूर से ही उसके आने की आवाजें सुनाई देने लगीं। पर यह दुर्भाग्य ही था कि वह शिकारियों के दूसरी तरफ वाले किनारे से होता हुआ सीधा निचले पोखरे तक चला गया था। पोखरे का बाहरी किनारा जहां हाथी खड़ा था, शिकारियों के छिपने वाले पेड़ से चालीस मीटर से अधिक की दूरी पर था। अगर हाथी उनके किनारे से पोखरे की ओर आया होता तो वन्यजंतु वार्डन उसमें अपनी गोली उतार चुका होता। यह शिकारी के कुंठित होने की बारी थी। वे फिर से प्रतीक्षा करने लगे, इस आशा के साथ कि कम से कम बाहर आते हुए तो हाथी उनके रास्ते से गुजरेगा।

अपनी प्यास बुझाने के बाद हाथी खाने की जल्दी में था क्योंकि खाने में देरी हो गयी थी। जैसी कि शिकारियों को आशा थी, वह उन्हीं के पेड़ की ओर आ रहा था। जैसे ही वह मार में आया वन्यजंतु वार्डन ने निशाना लेकर गोली दाग दी। गोली उसकी एक पसली से टकरायी और गिर गयी। राइफल की गोली से भिन्न यह गोली कुछ गुदगुदी और नीची थी। हाथी ने गोली की दिशा का गलत अनुमान लगाया और आगे की ओर धावा बोल दिया। लेकिन इससे पहले कि हाथी मार की सीमा से बाहर निकलता, चंद्रन ने बंदूक तेजी से भरी और गोली चला दी। लेकिन गोली एक कोण बनाती हुई उससे टकरायी और शिकारी भी यह देख सकते थे कि हाथी गुस्से में भरा हुआ आगे बढ़ गया। शिकारियों को सही निशाना नहीं मिला था। वे निराशा से भरे घर लौट आये। यह छटा दिन था।

घर पर शिकारियों का स्वागत करते हुए बिना बताये ही मोहन को पता चल गया कि वे असफल रहे हैं। वे दुखी और उदास थे। रात के खाने पर मोहन वातावरण में तनाव अनुभव कर रहा था। वे बहुत कम बोल रहे थे। वह जानता था कि उसके पिता अपने आपको तैयार कर रहे हैं कि वे इस काम को जारी रखें या छोड़ दें। पर जल्दी ही चुप्पी टूट गयी और तनाव

शिथिल पड़ गया। चंद्रन हमेशा की तरह हंसने और मजाक करने लगा। डा. रमेश समझ गया कि उसका मित्र किसी निर्णय पर पहुंच गया है कि अब वह केवल उस हत्यारे का पीछा ही नहीं करता रहेगा बल्कि वह उसे पकड़ने के लिए कटिबद्ध हो गया है। उसका सोचना ठीक था। चंद्रन इस विषय पर गंभीरता से सोच रहा था और संभावनाओं को तोल रहा था। वह इस निर्णय पर पहुंचा कि जब तक वह तिरछे दांत वाले का पैदल पीछा करने का जोखिम नहीं उठाता, उनके अभियान की सफलता की आशा धुंधली ही रहेगी। पर इसमें खतरा बहुत था, चाहे शक्तिशाली राइफल भी पास में क्यों न हो। अन्यथा इसका अर्थ होगा सप्ताह समाप्त होने पर तिरछे दांत वाले हाथी की मौत।

5

अगली सुबह, अभियान के अंतिम दिन, पौ फटने तक शिकारी पावों के निशानों के आधार पर हाथी का पता लगाने के लिए निकल पड़े। वन्यजंतु वार्डन ने वहां से खोज की जहां पिछली शाम हाथी को छोड़ा था। वह अकेला हाथी के पदचिह्नों पर कदम रखता हुआ आगे बढ़ने लगा। वह नहीं चाहता था कि उसके दोस्त रमेश और फारेस्ट गार्ड को चोट पहुंचे, इसलिए उसने उनसे सुरक्षित दूरी पर पीछा करने के लिए कहा।

पीछा करने के लिए पदचिह्न साफ और सरल थे। पर वन्यजंतु वार्डन को काफी सावधानी से काम लेना था। उसे सिर्फ खोज करने पर ही ध्यान एकाग्र नहीं करना था बल्कि हर घड़ी अपने चारों ओर भी नज़र रखनी थी क्योंकि क्या पता कहां हत्यारा लेटा हुआ प्रतीक्षा कर रहा हो। इसलिये वह काफी धीमी गति से बढ़ पा रहा था।

तिरछे दांत वाला हाथी काफी दूर चला गया था। चरने के लिए रास्ते में वह एक ही जगह पर रुका था। अंत में वन्यजंतु वार्डन जब उस तक पहुंचा, दोपहर बीत चुकी थी। वह पशु उस समय वृक्षविहीन क्षेत्र में था

जिसमें घुटनों तक ऊंची घास उगी हुई थी और कहीं-कहीं सूखा था। हाथी घास चर रहा था। वन्यजंतु वार्डन ने हवा ही परीक्षा की। वह अपनी खोज के शुरू से ही हवा की परीक्षा करता रहा कि कहीं वह उसकी गंध को हाथी तक तो नहीं पहुंचा रही है। इसके लिए वह मुट्ठी भर सूखी पत्तियों का चूरा करके हवा में उछालता और उसके गिरने की दिशा को देखता। यह आश्वस्त होकर कि हत्यारे को उसकी उपस्थिति की जानकारी नहीं है, वह घास के क्षेत्र के किनारे पर एक पेड़ के पीछे बैठ गया और उस पशु के अपनी मनचाही जगह पर आने की प्रतीक्षा करने लगा। पर हाथी में उस ओर आने के कोई लक्षण दिखाई नहीं दिये। छायाएं बढ़ रही थीं। अगर और प्रतीक्षा करनी पड़ी तो काफी देर हो जायेगी। और सात दिन का माफी का समय भी गुजर जायेगा। वार्डन के लिए यह अंतिम मौका था और उसे यह लेना ही था।

वह उठा, अपनी स्टन गन की परीक्षा की और अपने निशाने की ओर लुक-छिप कर बढ़ने लगा। छिपे रहने में ही उसकी एकमात्र आशा निहित थी। चूंकि कैप्चर गन आवाज नहीं करती थी, उसे आशा थी कि गोली चलाने के बाद भी उसका असर होने तक वह छिपा रह सकता है। चंद्रन अपने शिकार का ऐसे ही लुक-छिप कर पीछा कर रहा था जैसे चीता हरिण का पीछा करता है। वह कहीं किसी झाड़ी और कहीं किसी गड्ढे का सहारा लेता हुआ आगे बढ़ रहा था। जैसे-जैसे वह हत्यारे के नज़दीक आ रहा था जोखिम बढ़ रहा था। वह अपने हृदय की धड़कनों को सुन रहा था—धप...धप...। वह सोच रहा था कि क्या वह अपनी बंदूक को मजबूती से पकड़े रख पायेगा? जब वह मार की दूरी पर आ गया तो वह एक पतले से पेड़ के पीछे छिप गया, उस पर अपनी बंदूक टिकायी, निशाना लिया और गोली चला दी।

तिरछे दांत वाला हाथी दूसरी ओर देख रहा था। जैसे ही गोली उसके कंधे के पीछे एक मांसल स्थान से टकरायी वह पीछे घूमा। पीछे मुड़ते ही उसने चारों ओर देखा जैसे ढूंढ़ रहा हो कि किसने उस पर चोट की।



तभी हवा ने दिशा बदली और हाथी ने वन्यजंतु वार्डन की गंध पकड़ ली। उसकी हत्यारी वृत्ति एकदम उभर उठी। खेल को खत्म होता देख चंद्रन उठा, बचने का एकमात्र तरीका उसके पास रह गया था और उसने भाग निकलने का फैसला कर लिया।

वन्यजंतु वार्डन उठा, जितनी तेजी से भाग सकता था, वह भाग पड़ा। हत्यारे ने शिकारी को देख लिया था और उसके पीछे दौड़ पड़ा। इस समय चंद्रन के पीछे एक भयंकर, खामोश और कृतसंकल्प हत्यारा पड़ा था। जंगल के वृक्षहीन भाग में भी एक आदमी के लिए कई बाधाएं थीं। पर हाथी को रोकने वाली कोई चीज़ नहीं थी। घनी से घनी झाड़ी को रौंदता हुआ हाथी उसके नज़दीक आता जा रहा था। वार्डन को अपनी बंदूक एक फालतू बोझ लगी तो उसने उसे फेंक दिया। इससे उसे अपनी गति बढ़ाने में थोड़ी



मदद मिली, पर साथ ही उसे सावधान भी रहना था। एक ग़लत कदम, सिर्फ एक ठोकर उसकी जीवन लीला समाप्त कर सकती थी।

कांटे की दौड़ थी। हाथी गरजता हुआ उसका पीछा कर रहा था। वन्यजंतु वार्डन के भाग्य से वह एक जंगली पगडंडी पर पहुंच गया और अब वह अपने को हाथी से आगे रख सकता था। पर कब तक! अपने घावों के बावजूद हत्यारा अपनी तेजी बनाये हुए था जबकि शिकारी तेजी से थकता जा रहा था। हाथी नज़दीक आ गया था और वार्डन को नीचे पटकने के लिए उसने अपनी सूंड़ ऊपर उठायी। अचानक थकान के कारण हाथी पर दवाई का नाटकीय प्रभाव पड़ा। उसकी सूंड़ धीरे से नीचे आई, जैसे धीमी गति की फिल्म हो। उसकी टांगें लड़खड़ायीं, शरीर कांपा और वह गिर पड़ा।

6

हाथी के गिरने की आवाज सुनकर वन्यजंतु वार्डन रुक गया। जब हाथी नहीं उठा तो उसने अपनी सीटी बजायी। डा. रमेश और गार्ड सुनते ही दौड़े चले आये। हालांकि हाथी जमीन पर गिरा हुआ था, पर काफी भंयकर लग रहा था। उसकी गहरी, भारी सांसों को सुनते हुए उन्होंने उसे देखा—यह इस बात का चिह्न था कि हाथी पूरी तरह से प्रशांतक दवाई के प्रभाव में है। शिकारी सावधानी से उसके निकट आये।

यह आश्वस्त होने के लिए कि हाथी इतनी गहरी नींद में है कि उसे आपरेशन करने देगा, डाक्टर ने कई परीक्षाएं कीं। शिकारियों के सौभाग्य से हाथी इस प्रकार गिरा था कि उसका घाव बाहर की ओर था। यह एक गहरा घाव था। जब डाक्टर रमेश ने उसे खोला तो खून और मवाद की फुहार उसके कपडों पर आ पड़ी। "यह बेचारा बड़ी यंत्रणा भोग रहा होगा।" डाक्टर ने कहा।

"कोई आश्चर्य नहीं कि वह हत्यारा बन गया," वार्डन बुदबुदाया।

डाक्टर ने जब घाव के अंदर गहरे में टटोला तो उसमें से शीशे के तीन





टुकड़े निकले, स्पष्ट है कि वे किसी पुरानी कारतूसी बंदूक से निकले होंगे. उसने वे टुकड़े वार्डन को दे दिये। ''यह किसी किसान का काम है जिसकी फसलों को यह चाव से खाता होगा'', चंद्रन ने धीमे गुस्से के स्वर में कहा।

डा. रमेश ने घाव को साफ किया। काफी मात्रा में ऐंटीबायोटिक्स दवाइयां उसमें डालीं ताकि यह जल्दी ठीक हो जाय फिर पट्टी बांध कर टांके मार दिये। अभी चूंकि उसमें जागने के कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहे थे, तो रमेश ने उसे प्रशांतक का तोड़ भी खिला दिया। फिर शिकारी उससे सुरक्षित दूरी पर चले गये और उसे देखने लगे।

कुछ देर बाद गिरा हुआ हाथी हिला। फिर बहुत धीरे-धीरे खड़ा हुआ। जब वह उनकी ओर घूमा, उन्होंने देखा कि उसका दायां दांत, जहां से वह दूसरे दांत को काटता था, गिरने से टूट गया है। वह नर हाथी अब एक ही तरह से तिरछें दांत वाला हाथी रह गया था! जिस दर्द को हाथी अब तक भोग रहा था, वह समाप्त हो गया था और वह मनचाही दिशा में स्वतंत्रतापूर्वक अपनी सूंड़ को घुमा सकता था। यह ऐसा था जैसे कोई अत्याचारी बोझ उस पर से हटा दिया गया हो। अब उसे आदमी द्वारा उगायी गयी फसलों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

हाथी ने दो आदमियों को देखा पर उन पर आक्रमण करने की कोशिश नहीं की। अब उसने अपनी सूंड़ हवा में ऊंची उठाकर लहरायी तो उन लोगों को आश्चर्य हुआ कि क्या हाथी उनसे यह कहने की कोशिश कर रहा है ''धन्यवाद!''

रात भर चौकसी

पिताजी, मेरी छुट्टियां जल्दी समाप्त हो जायेंगी। मैं चाहता हूं कि मैं शेनबागा ओरानी पर एक रात वन्यजंतुओं को देखने में बिताऊं।''

''क्यों नहीं, बेटे'', उसके पिता ने स्वीकृति में कहा। ''यह सही समय भी है। आजकल स्वच्छ चांदनी रातें हैं'', उसने आगे कहा। मोहन रोमांचित था। ''दरअसल, मैं खुद भी इस बारे में सोच रहा था।, उसके पिता कह रहे थे।'' इससे मैं उस क्षेत्र में शिकार-चोरों पर नज़र रख सकता हूं और वन्यजंतुओं की निगरानी भी कर सकता हूं। विशेष रूप से मैं यह देखना चाहता हूं कि सूखे में बड़े पशु किस तरह गुजारा करते हैं।

दिन का खाना जल्दी खाने के बाद वे निकल पड़े। रास्ते में उन्हें तिरछे दांतों वाला हाथी मिल गया। मृगवन के कर्मचारी अभी आदतवश इसे तिरछे दांतों वाला हाथी ही कहते थे वरना अब यह तिरछे दांत वाला है नहीं। हाथी पगडंडी के किनारे चर रहा था। बिना उन्हें पहचानने का कोई संकेत दिये, उसने उन्हें गुजर जाने दिया। वार्डन ने देखा कि इसका घाव ठीक हो रहा है।

देर दोपहर बाद वे शेनबागा ओरानी पहुंचे। पोखरे के पास वाले आम के पेड़ पर शिकार-चोरों का बनाया हुआ मचान अभी वैसा ही था। पर काफी दिनों से इसका उपयोग न होने के कारण कुछ जगहों से इसकी छाजन उतर गयी थी और इसे छाने के लिए कुछ ताजा हरी पत्तियों की जरूरत

थी। मोहन से कुछ छोटी टहनियां एकत्र करने के लिए कह कर वन्यजंतु वार्डन पोखरे में आने वाले पशुओं के पैरों के निशानों को देखता हुआ पोखरे के चारों ओर घूमने लगा। वहां कई जानवर आते थे, यह देखकर वह बहुत खुश हुआ।

मचान पर चढ़ने के लिए एक बांस के डंडे से सीढ़ी बनायी गयी। इसके अंकुओं को तराश कर उनमें पैर रखने की जगह बनायी। मोहन कभी ऐसी सीढ़ी पर नहीं चढ़ा था। उसे इस पर बंदर की तरह चढ़ना था। पहले तो उसे बड़ा मज़ा आया पर जैसे-जैसे वह ऊपर चढ़ता गया, सीढ़ी इधर से उधर झूलने लगी और चढ़ना कठिन होता गया। एक चैन की सांस के साथ उसने मचान पर पैर रखा।

यह मचान आम के पेड़ की दो टहनियों पर कुछ आड़े बांस रखकर और उन्हें जंगल से एकत्र की गयी बेलों से बांध कर बनाया गया था। मचान के चारों ओर से बंद करने के लिए कुछ और बांस की टहनियां बांधी गयी थीं। किनारों से टहनियां तथा बेलें लटकायो गयीं ताकि पोखरे पर आने वाले पशु वहां बैठे लोगों को न देख सकें। देखने के लिए झरोखे भी बनाये गये थे। जबकि बिना किसी की नज़र पड़े वहां पर चार लोगों के बैठने तथा दो लोगों के लेटने के लिए काफी जगह थी। मचान से पोखरे तथा इसके आसपास की जगहों का दृश्य काफी अच्छा दिखाई देता था।

पोखरे का आकार बेडौल था और यह सिर्फ आधा ही भरा हुआ था। आम के पेड़ के नजदीक का किनारा चट्टानी था और उस ओर का पानी साफ था। पर दूसरा किनारा कीचड़ भरा था और पोखरे का उस ओर का पानी गंदला था। पोखरे के दूर वाले किनारे की ओर पांवों के बहुत-से निशान आ रहे थे। पीछे सूखे और धूलभरे जंगल के विपरीत पोखरा तथा इसके आसपास का क्षेत्र ठंडा और हरा था– जैसे रेगिस्तान में कोई मरुद्वीप हो।

अभी दोपहर बाद का समय था और मोहन को मचान के अंदर गर्मी और घुटन महसूस हो रही थी। मोहन के पिता ने मचान के तल पर से एक सूखी पत्ती उठाकर इसके किनारे से नीचे की ओर गिरा दी। यह पत्थर की

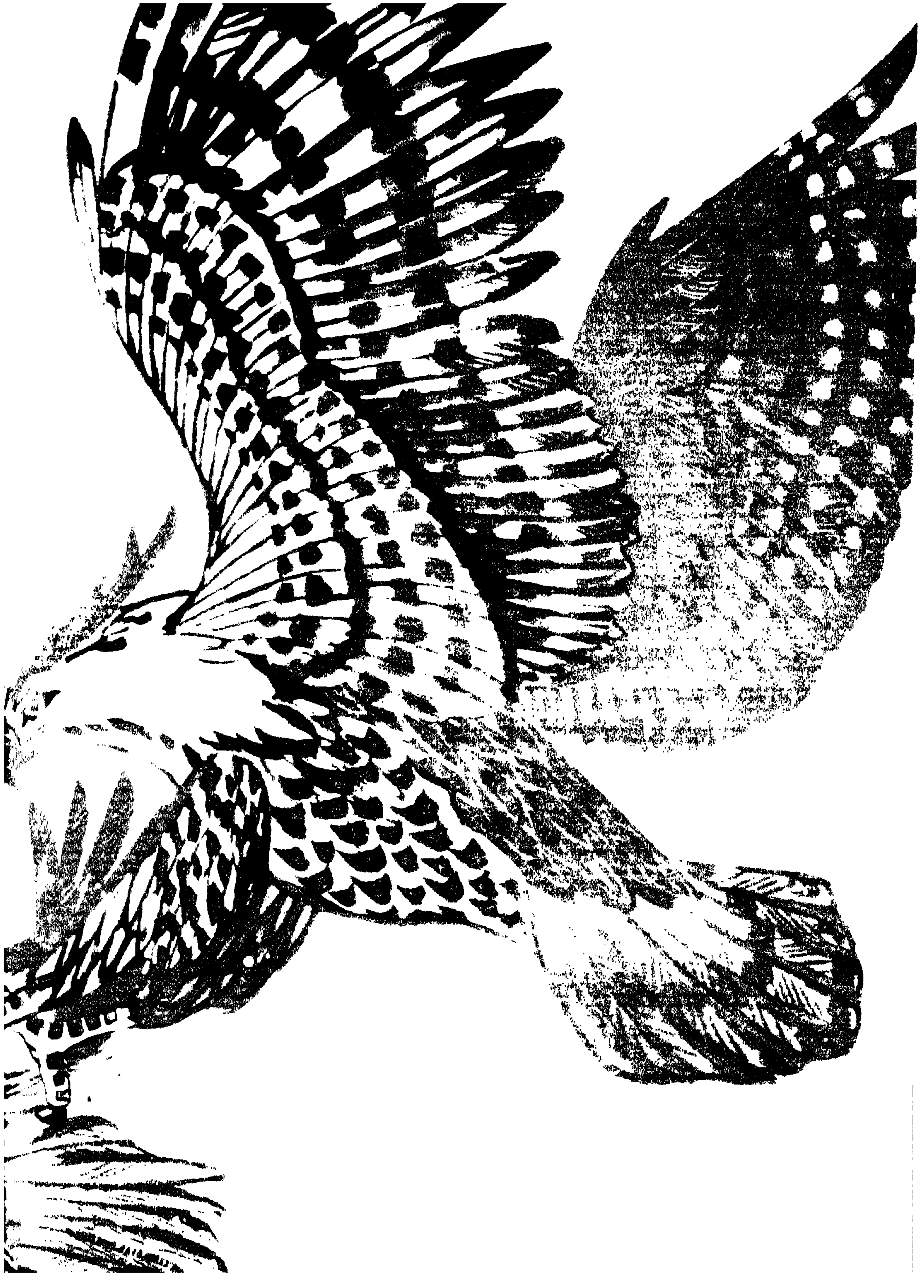


तरह सीधी नीचे चली गयी। वह मुस्कराया। और फिर जंगल की शांति भंग न करते हुए इशारे की भाषा में मोहन को बताया कि हवा नहीं चल रही है, जो उनकी गंध को पोखरे पर आने वाले पशुओं तक पहुंचाती। वन्यजंतुओं में, विशेषरूप से घास खाने वाले पशुओं में सूघने की बहुत तेज शक्ति होती है और अनुकूल परिस्थितियों में वे बहुत दूर से ही आदमी की उपस्थिति का पता लगा लेते हैं। गंध ले जाने वाली हवा के न होने पर वन्य पशुओं को देखने की संभावना बढ़ गयी थी।

2

छोटी चिड़ियां सबसे पहले पोखरे पर आयीं। बुलबुल और जंगली मैनाओं के झुंड वहां अपनी प्यास बुझाने के लिए आये। पानी पीने के बाद वे पोखरे में चट्टानों के बीच के उथले पानी में कूद पड़ीं और नहाने लगीं। वे जोर-जोर से चहचहा रही थीं। मजे से उन्हें देखते हुए मोहन को पिकनिक पर अपने कक्षा के मित्रों की याद आ गयी। मोहन ने देखा कि जब चिड़ियां अपने नहाने का आनंद ले रही थीं, एक शिकार (बाज़) छिपता हुआ वहां एक ऊंचे पेड़ की छाया में बिना दिखे आकर बैठ गया। मोहन ने इसकी नीयत का अनुमान लगा लिया था और पक्षियों को चेतावनी देने के लिए चिल्लाना चाहता था। उसके विचारों को समझते हुए मोहन के पिता ने गर्दन हिलाकर उसे मना कर दिया। आखिर, शिकरे को भी जीवित रहना है और छोटी चिड़ियां ही उसका भोजन होती हैं, एक समझदार वन्यजंतु विशेषज्ञ की तरह मोहन ने सोचा। इसके अतिरिक्त, चिल्लाकर उसने मृगवन की शांति





भी भंग कर दी होती। उन्होंने देखा, अचानक शिकरे ने एक झपट्टा मारा, हवा में गोली की तरह सनसनाता हुआ झपट्टा और एक बुलबुल को अपने चंगुल में दबोच कर अपने शिकार के साथ अपने अड्डे की ओर लौट गया। आतंक से चीं ची करते हुए उस बुलबुल के नहाते हुए साथी उड़ गये।

शांति के फिर से लौटते ही लंगूरों का एक दल पेड़ों पर से आसानी से मनोहारी ढंग से कूदता हुआ वहां आया। पोखरे पर पहुंचने के बाद वे सीधे नीचे नहीं उतरे बल्कि शाखाओं से शाखाओं और पेड़ों से पेड़ो पर कूदते हुए तेज नज़रों से देखने लगे कि कहीं आसपास उनका कोई शत्रु तो नहीं है। सब ठीक होने की आश्वस्ति पाकर वे एक-एक करके नीचे आये और पोखरे से पानी पीने के लिए उसकी चट्टान की ओर गये। छोटे बच्चे, जो अपनी मांओं के पेट से लटके हुए थे, कूद मारकर नीचे उतर गये और खेलने लगे। वे शरारतों से पूरी तरह से भरे थे और उन्हें देखना बड़े मजे का काम था।







लंगूरों को देखते हुए मोहन का ध्यान एक छोटी-सी चिड़िया की ओर गया जो उड़कर आम की नीचे की किसी शाखा पर आकर बैठ गयी थी। चिड़िया इतनी सुंदर थी कि मोहन सांस रोककर उसे देखता रहा। अपने पिता की दूरबीन से उसने उसे और नज़दीक से देखा और उसके सौंदर्य से चमत्कृत हो गया। वह चिड़िया बुलबुल जितनी बड़ी थी। रंग बिल्कुल सफेद और उस पर सिर तथा कलगी काली। चिड़िया का सबसे आकर्षक भाग इसकी पूंछ थी—दो लंबे सफेद पंख जैसे दो रिबन पीछे लटके हों। यह नर पैराडाइस फ्लाइकैचर थी। मोहन चकित था कि पानी पीते समय यह



चिड़िया अपनी सुंदर पूंछ को बिना भिगाये कैसे रख सकती है। चिड़िया पोखरे के ऊपर से उड़ी, एक गहरा चाप बनाते हुए नीचे की ओर गोता मारा और पोखरे की सतह पर पहुंचते ही अपना मुंह खोल लिया, मुंह भर कर पानी निगल लिया और अपने आपको सीधा करके उड़ गयी। इस क्रिया को उसने दो बार दोहराया। शाम का सुनहरा प्रकाश और जंगल उस चिड़िया के प्रदर्शन के लिए एक आधार तैयार कर रहे थे।

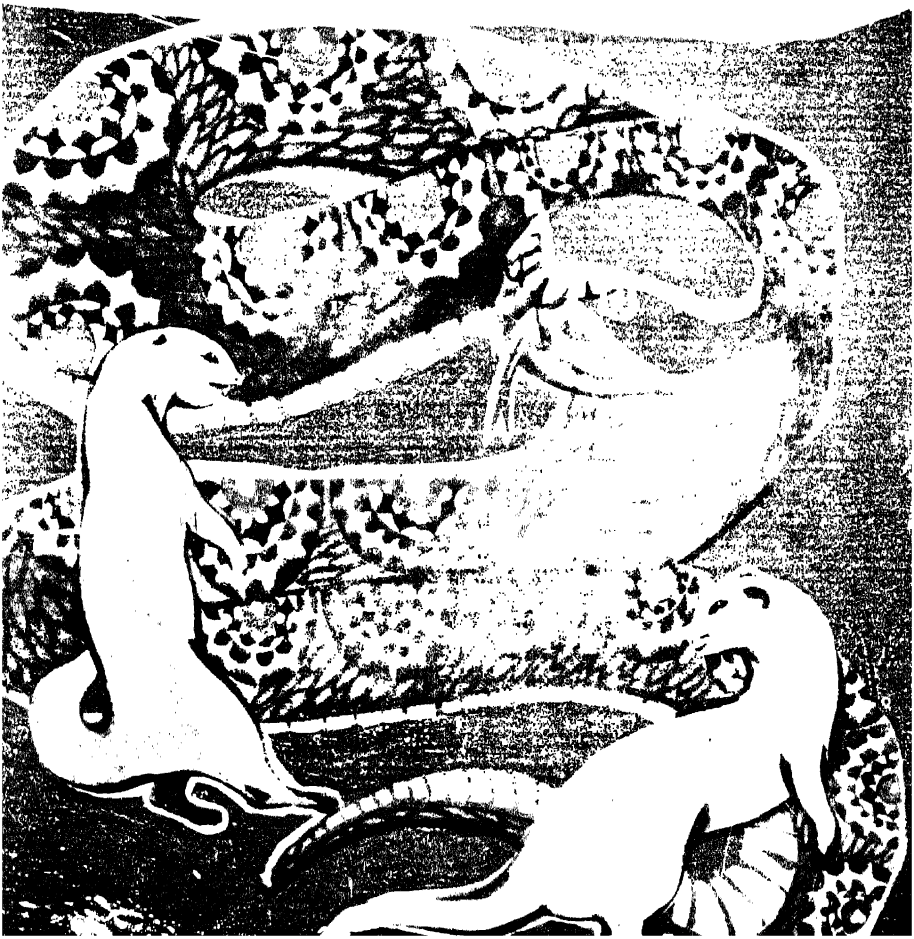
पोखरे पर इसके बाद के आगंतुक थे चित्तीदार हरिण जिन्हें हम चीतल कहते हैं। वे हिचकते हुए आगे बढ़े। मोहन का अनुमान था कि एक बड़ा हरिण उनके आगे-आगे होगा। पर छिपने के स्थान से सबसे पहले निकलने वाली एक बूढ़ी हरिणी थी। वह नाड़ियों का एक गुच्छा लग रही



थी। जरा-सा भी आवाज़ होने पर अपने अगले पैर पटकती जैसे बस भागने ही वाली हो। धीरे-धीरे, एक एक कदम करके, वह पानी के सिरे तक पहुंची, वहां पहुंच कर वह क्षण भर के लिए खड़ी पानी को घूरती रही। फिर उसने पानी पीने के लिए सिर नीचे कर दिया। पर ऐसा करते हुए भी वह चिंतित लग रही थी। अचानक, उसने यह देखने के लिए कि, आस पास कोई शत्रु तो नहीं है, तेजी से अपना सिर उठाया। अंत में उसने देर तक पानी पीने के लिए अपना सिर नीचे किया। यह प्रतीक्षा करते हुए झुंड के लिए एक संकेत था, जो एक साथ भाग कर पानी पीने के लिए आ गये। मोहन को बड़े हरिणों को पिछले पांव पर खड़े होकर, सबसे सुविधाजनक स्थान लेने के लिए झुंड के बीच में से धकियाते हुए निकलते देख बड़ा आश्चर्य हुआ। हरिण पोखर के पास काफी देर तक रहे। उनके बच्चे खेल रहे थे और दो बड़े हरिण आपस में लड़ने लगे। उन्होंने अपने सिर नीचे करके एक दूसरे पर हमला बोल दिया। जोर की आवाज के साथ उनके सींग टकराये। इसके बाद की लड़ाई धकेलने वाले मुकाबले की थी। यह कई बार दोहराया गया और तब तक चलता रहा जब तक उनमें से कमजोर हरिण मुड़ कर तेजी से भाग गया। मोहन को उम्मीद थी कि जीतने वाला हारने वाले का पीछा करके उसके पेट में अपने सींग घुसा कर उसे खत्म कर देगा। पर उसने ऐसा नहीं किया। इस तरह की लड़ाइयां अक्सर प्रजनन काल में हरिणों के बीच होती रहती हैं ताकि यह फैसला हो सके कि झुंड का सरदार कौन होगा। झुड़ का हरिण सरदार तब तक किसी की फिक्र नहीं करता जब तक कि कोई उसकी स्थिति को चुनौती नहीं देता या उसके कामों में दखल नहीं देता। ऐसी स्थिति में फिर लड़ाई होती है। पर झुंड का नेतृत्व, तो अधिकतर मादा करती—चाहे वह बुढ़ी हो, अधेड़ या जवान। यह अधिक स्थायी इंतजाम होता है। आमतौर पर बूढ़ी हरिणी को ही नेता चुना जाता है। ऐसी ही हरिणी जो इस झुंड को पानी तक लायी थी।

जंगल आवाजों से भरा था, कुछ मीठी, कुछ तीखी कुछ हल्की कुछ ऊंची कुछ छोटी कुछ लंबी। इनमें से कुछ को मोहन एकदम पहचान गया,

जबकि बाकी को वह नहीं पहचान सकता था। शाम के घिरने के साथ ही चिड़ियों का शोर बढ़ गया था; इनमें से सबसे अधिक शोर जंगली मुर्गों, तोतों और हरे बसंतों का था। अचानक एक मर्माहत चीख सुनाई दी जैसे किसी पर आक्रमण किया जा रहा हो और उसका गला दबाया जा रहा हो। मोहन को उम्मीद थी कि उसके पिता हमले के शिकार को मदद के लिए जायेंगे। तभी, रात पड़ने से पहले चेड़ों का एक दल उड़ता हुआ आया और तीखी कर्णभेदी चीखों के साथ नजदीक के एक पेड़ पर उतर गया। ये ही कई



तरह के शोर मचा रहे थे और कुछ देर पहले सुनी गई चीख भी इन्हीं की थी। अगर मोहन मृगवन की शांति भंग न करने के लिए इतना सावधान न होता तो उनके इस करतब पर जरूर हसंता।

रात पड़ने से पहले पोखरे पर अंतिम आने वालों में भूरे नेवलों का एक जोड़ा था। वे सपेरों के पास रहने वाले आम नेवलों से अधिक बड़े थे। खाने के लिए वे पत्थरों और पत्तियों में ढूंढ़ रहे थे। ऐसा करते हुए उन्होंने एक चट्टान के नीचे आराम करते एक गुस्सैल सांप को छेड़ दिया था। नेवलों को देखने पर सांप को अपनी गलती महसूस हुई और उसने भागने की कोशिश की। पर मृगवन में चतुर सांप पकड़ने वालों को ऐसी स्थिति का सामना करना आता था और जल्दी ही उन्होंने उसे पकड़ लिया। वे उसे खींच कर घास के बीच में ले गये जहां मोहन नहीं देख सकता था ।

3

अंधेरा जंगल में चादर की तरह फैल गया था। जंगल के पशु और पक्षियों के लौटने के समय तथा रात में आने वाले पशु-पक्षियों के बीच का समय गहरे सन्नाटे का समय था। एक अबाबील ने "चक, चक, चकट्रट्" करते हुए सबसे पहले सन्नाटा तोड़ा। फिर एक बड़े उल्लू की कुछ-कुछ देर बाद 'बुब्', 'बुब्' की तेज चीख उभरने लगी। मोहन को वे कहानियां याद आयीं जिनमें जंगलों में खोये हुए लोग इस विचित्र चीख को सुन कर पागल हो जाते हैं। वह कांप उठा।

धुंधलके में बैठे मोहन ने देखा कि उसे खाली आंखों की अपेक्षा दूरबीन से अधिक साफ दिखाई दे रहा है। फिर भी उसे आंखों की अपेक्षा अपने कानों पर अधिक भरोसा करना था। वह कामना करने लगा कि चांद जल्दी उग आये और पोखरे तथा आसपास के क्षेत्र को प्रकाशित कर दे।

देर तक देखते रहने से मोहन थकने लगा था। नीचे के बांस भी उसे चुभने लगे थे और तकलीफ दे रहे थे। वह अपनी स्थिति बदलना चाहता

था। वह उन मच्छरों और कीड़ों को भी मसल कर हटा देना चाहता था जो उसे काट रहे थे और परेशान कर रहे थे। वह अपनी सुन्न टांग को पसारना चाहता था। उसकी इच्छा हुई कि वह अपने गले को खंखारे, छीकें और अपने पिता के साथ बातें करे, सैकड़ों सवाल उनसे पूछे। पर यह सब करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई, उसे डर था कि ऐसा करने से पशु डर कर भाग जायेंगे। उसने अपने पिता कि ओर प्रशंसा तथा ईर्ष्या से देखा क्योंकि वे मूर्ति की तरह स्थिर बैठे थे। उसने उन्हें ऐसे लोगों की बात करते सुना है, जो मचान के एक सिरे पर घंटों बिना हिले बैठे रह सकते हैं, चाहे उनकी एकरसता को तोड़ने के लिए वहां कोई भी आये। मोहन अपने को काफी भाग्यशाली समझ रहा था क्योंकि जंगल के जो रोमांचक सपने वह देखा करता था उसमें से कुछ को साकार करने की सुविधा उसे मिल रही थी। और फिर भी वह परेशान था। वह चाहता था कि बिना परेशानी महसूस किये अपने पिता की तरह स्थिर बैठा रहे। अपने पिता कि ओर ध्यान से देखने पर उसने देखा कि वे आराम से हैं। मोहन ने भी सोच लिया कि वह अपने पिता की ही तरह हल्का हो जायेगा ताकि रात की निगरानी का मजा ले सके।

चांद का आकार तीन चौथाई था और वह काफी देर से उगा। पर जब वह दो पहाड़ियों के बीच से निकल रहा था तो बहुत सुंदर दृश्य था। चांद को रात के तारों भरे आकाश में यात्रा करते हुए देखा जा सकता था। पोखरे की सतह पर चांद चांदी की एक चमकदार नौका की तरह लग रहा था जो धीरे-धीरे पानी में अपना रास्ता बना रही हो। जब भी कोई मछली या मेंढक उछलता, यह चित्र हजारों टुकड़ों में टूट जाता और सतह के फिर से शांत होने पर फिर से जुड़ जाता।

चांदनी में पेड़ और पत्थर जंगल के फर्श पर काले और सफेद धब्बों की एक संरचना की तरह लग रहे थे। इन परिस्थितियों की आदत न होने के कारण मोहन के लिए प्रकाश और छाया के इस खेल में स्वयं को व्यवस्थित करना कठिन हो रहा था। मोहन की कल्पनाशक्ति व्यग्रता से काम करने लगी थी और प्रत्येक छाया में चीता, लकड़बग्घा या भालू दिखाई देने लगे

थे। लेकिन जब तक वह पोखरे के आसपास की छायाओं को पहचान पाता, चांद की गति के साथ ही उनकी आकृति बदल गयी थी। मोहन को फिर से पहचानने की कोशिश करनी पड़ी। चांद पर से गुजरते हुए बादलों से मोहन की आंखों पर जोर पड़ने लगा था और उनमें पानी आ गया था। इसे भांपते हुए उसके पिता ने संकेत से उसे आंखों पर अधिक दबाव डालने के बजाए कानों पर भरोसा करने के लिए कहा।

थोड़ी देर बाद ही एक बड़ी मादा सुअर के नेतृत्व में जंगली सुअरों का एक रेवड़ फुर्ती से पोखरे की दूसरी तरफ आया। जल्दी से पानी पीने के बाद वह रेवड़ कीचड़ में घुस कर उसमें लोट लगाने लगा। अपने आपको ठंडा



करने के बाद सुअर बाहर निकल आये और कीड़ों, सूंड़ियों, गिरे हुए फलों और कंदों को ढूंढते हुए धीरे-धीरे दूर चले गये। सर्वाहारी होने के कारण वे अपने खाने में चुनाव करने के आदी नहीं थे। पर निश्चित रूप से अपने चचेरे भाई, पालतू सुअरों की तुलना में उनका खाना काफी साफ–सुथरा था

कुछ मिनट बाद एक विशालकाय, भयानक-सा दिखने वाला सुअर दूसरी ओर से आया और पानी पीने लगा। उसके छोटे, पर तेज़ गजदंत (लंबे नुकीले दांत) थे और वह रेवड़ के सुअरों से दुगने आकार का था। जब वह पानी पी रहा था तो एक सूखी टहनी के नीचे गिरने से वह घबरा गया। सुअर को लगा कि किसी ने उस पर हमला कर दिया है। अपना सिर ऊपर की ओर



उठाये हुए वह तेजी से घूमा। उसके गजदंत चांदनी में चमक रहे थे। उसके कड़े बाल खड़े थे। उसने गुरगुराते हुए अपना क्रोध भरा चेहरा आवाज की ओर घुमाया। उसे देखकर मोहन ने स्वयं से कहा कि अगर वह एक भूखा चीता होता तब भी उस सुअर से दूर रहना ही पसंद करता जो लड़ाई के लिए ऐसा तत्पर दिख रहा था।

वे अपने साथ खाना भी लाये थे। कागज़ के करकराते शोर से बचने के लिए वन्यजंतु वार्डन अपना खाना प्लास्टिक की शीट में लपेट कर लाया था। जंगल की नीरवता में कागज़ की आवाज़ भी कई गुना बढ़कर तेज कान वाले वन्य पशुओं को अशांत कर देती है। खाना खाने और काफी पीने के बाद मोहन के पिता ने सुझाव दिया कि उन्हें बारी-बारी से रात में चौकसी करनी चाहिए। यह भी तय हुआ कि यदि कोई दिलचस्प बात होती है तो नज़र रखने वाला आदमी दूसरे को जगा देगा।

4

पहले पहरे पर मोहन की बारी थी। लाल चित्तियों वाला टिटहरियों का एक जोड़ा उड़ता हुआ आया। पर नीचे उतरने से पहले उन्होंने पेड़ के शिखर की ऊंचाई पर से पोखरे के चक्कर लगाये। जब वे उड़ रहे थे, उनमें से एक ने मचान तथा उस पर बैठे लोगों को देख लिया था। उसने एकदम दूसरे को चेताया। वे आम के पेड़ों के चक्कर पर चक्कर लगाने लगे और वे पागल से "डिड-ही-डू-इट", "डिड-ही-डू-इट" चिल्लाते हुए जंगल के जीवों को मोहन और वार्डन की उपस्थिति के बारे में चेतावनी देने लगे। इससे मोहन चिढ़ गया था और कामना करने लगा कि यह पक्षी वहां से चला जाये। उनके सौभाग्य से, वे पक्षी अकसर ऐसा ही करते थे इसलिए किसी ने उनकी चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया।

आमतौर पर, जब हाथियों का कोई दल चल रहा हो तो किसी को भी इसका पता लग सकता है। दल के वहां पहुंचने से काफी पहले ही मोहन

सावधान हो गया था। एक दूसरे से संपर्क बनाये रखने के लिए हाथी बार-बार चिल्लाते थे। मां हथिनी अपने बच्चों को ठीक तरह से रहने के लिए डांटती थी। पर छोटे बच्चे अपनी मांओं की नज़रों से दूर चले जाते और एक दूसरे के साथ शरारत करते हुए आनंदित होते। वे शोर मचाते हुए, पेड़ों की टहनियों को तोड़ते हुए, ऊंची टहनियों तक पहुंचने के लिए अपने से छोटों को धकेलते हुए चल रहे थे।

पोखरे के नज़दीक आते ही वे दौड़कर पानी के किनारे पर आये और किसी प्यासे की तरह पीने लगे। जब-तब वे आपस में एक दूसरे पर पानी के छींटे उछालते। जल्दी ही वे सभी भीग गये थे और चांदनी में चमकने लगे थे जिससे वे अपने आकार से बड़े लगने लगे थे। पानी पीने के बाद कुछ बूढ़े हाथी अपने पांवों से मथे कीचड़ को अपने ऊपर छिड़कने लगे। कुछ जमीन पर अपने पैर पटक कर और उससे निकली मिट्टी को अपने ऊपर डाल कर धूल-स्नान कर रहे थे। मोहन ने सोचा, ''अगर उन्हें इस तरह गंदा होना ही है तो फिर नहाने का फायदा ही क्या है?'' इस रहस्य को अगले दिन उसके पिता ने ही खोला। उन्होंने बताया कि हाथी धूल और कीचड़ में स्नान सिर्फ अपने को ठंडा रखने के लिए ही नहीं करते बल्कि वे अपने शरीर से चिपके चिचड़ों और अन्य परोपजीवी कीड़ों को हटाने के लिए भी करते हैं।

दल का नर हाथी सबसे अंत में पोखरे पर पहुंचा। वह एक शानदार हाथी था। एक जोड़ी लंबे और बराबर गजदंत वाला। वह इतना विशाल और शानदार था कि मोहन ने उसे बहुत सराहा। दल में कुछ छोटे नर हाथी भी थे, उन्होंने अपना एक दल बना लिया था और वे अनाड़ीपन के खेल में लगे थे। हाथियों के जाने के बाद ऐसा लगा जैसे तुफान के बाद शांति हो गयी हो।

जैसे-जैसे समय अर्ध रात्रि की ओर बढ़ता गया, आगंतुकों की संख्या कम होती गयी और जब मोहन की सोने की बारी आयी तो उसे इसके लिए खेद नहीं था। मोहन की निगरानी की अगली बारी सुबह के शुरू के घंटों में थी। और चूंकि अब उसकी दिलचस्पी की कोई चीज वहां नहीं थी, इसलिए

वह जल्दी ही फिर सो गया। सारे जंगल में फैले एक शोर ने उसे जगा दिया था। चीतल की कर्णभेदी और सांबर की 'कां-कां...' के साथ मिली हुई लंगूर की 'खो...खो...' से पता चल रहा था कि पशु बुरी तरह खतरा महसूस कर रहे थे। जल्दी ही मयूरी भी उस समूह गान में योग देने लगी। हल्की बयार चल रही थी। मोहन एकदम उठ बैठा, वह बहुत उत्तेजित था कि इन पशुओं ने किसी शिकारी पशु, संभवतः चीते को देख या सूंघ लिया है। अब तक उसके पिता भी जाग गये थे। जल्दी ही हवा रुक गयी और खतरे की चीखें मंद पड़ गयीं। यह हवा ही शिकारी पशु की गंध को उसके शिकारों तक ले गयी थी। उन्होंने हत्यारे को नहीं देखा था। फिर पूर्ण शांति छा गयी थी। अब या तो वह हत्यारा चला गया या बिना दिखे अपने शिकार पर घात लगा रहा है। यह डर और अनिश्चितता ने उत्पन्न शांति थी। वातावरण में एक तनाव था जिसे मोहन महसूस कर सकता था। अचानक फिर हो-हल्ला मच गया। हत्यारे ने हमला कर दिया था। फिर से हरिणों के खतरे की चीख ऊंची हो गयी थी। ज्यादा ऊंचा स्वर उस रेवड़ का था जिस पर शिकारी ने हमला किया था। लेकिन यह चीख अधिक देर तक नहीं रही। हमला हुए पशु एक दूसरे को चेतावनी देने की कोशिश करने लगे थे और दूसरे पशु जंगल में उस खतरे की सूचना दे रह थे। पर जब शिकारी को अपना शिकार मिल गया तो खतरा टल गया। अब कुछ देर के लिए शांति थी। इसलिए वे अपने अपने काम पर वापस चले गये।

हत्यारे का पता लगाने के लिए मोहन और उसके पिता को अधिक इंतजार नहीं करनी पड़ी। एक चीता गुर्राया। फिर वह बार-बार गुर्राता रहा। यह बहुत ही भयानक और विस्मयकारी आवाज थी जो मोहन ने कभी नहीं सुनी थी। ज्वार की लहरों की तरह उसकी यह गुर्राहट सारे जंगल पर छा गयी और जंगल की अन्य सभी आवाजों को बहा ले गयी। मोहन की रगों में ठंड की एक लहर दौड़ गयी। इस गुर्राहट के उत्तर में दूर से एक गुर्राहट सुनाई दी। जब चीते आपस में बात करते हैं तो ऐसा लगता है कि सारा जंगल चुप होकर सुन रहा है। दूसरा चीता धीरे-धीरे नज़दीक आ गया और



आमंत्रित करने वाले चीते के साथ उसकी दावत में शामिल हो गया। अंत में वे चीते इक्का-दुक्के गुर्राहटों के अलावा शांति से ही खाते रहे।

शेर आम तौर पर दलों या जोड़ों में चलते हैं। उनके विपरीत चीतों के बारे में कहा जाता है कि वे अकेला जीवन जीते हैं, सिर्फ समागम ऋतु में चीतों के जोड़े को एक साथ देखा जा सकता है। या फिर जब मादा चीता अपने शावकों को शिकार और बचाव करना सिखाती है उस समय भी एक से अधिक चीते एक साथ देखे जा सकते हैं। वन्य वार्डन को अब विश्वास हो गया था कि मृगवन के इस भाग में चीतों का यह एक ही जोड़ा रहता है। उसने उनके पदचिह्न तो कई बार देखे थे पर कभी उनका सामना नहीं हुआ था। चीतों के लिए उसकी विशेष जिम्मेदारी थी और वह इस जोड़े को देखने के लिए उत्सुक था।

मोहन ने चिड़ियाघर के अलावा कहीं चीता नहीं देखा था और उसके मन में इसे देखने की बड़ी इच्छा थी। वह बड़ी बेताबी से चीतों के आने की कामना कर रहा था। दिन निकलने के साथ-साथ वह निराश होने लगा था। तब पौ फटने पर उसे पगडंडी पर हल्की-सी चलने की आवाज सुनाई दी।

जैसे ही उसने देखा, एक शानदार चीता उसके सामने था। उसकी खाल पर प्यारी धारियां पड़ी थीं और उसके प्रत्येक कदम में शक्ति झलकती थी। वह मचान के पास से गुजरता हुआ पोखरे के सिरे तक गया। वहां पानी साफ था। चट्टान पर से झुककर वह पानी पीने लगा। एक छोटा चीता भी उसके पास आ गया। ऐसा लगता था कि वह मादा चीता थी। इस बात की पुष्टि बाद में मोहन के पिता ने मादा चीता के पगचिह्नों को देखने के बाद की। उगते हुए सूर्य की किरणें दोनों पशुओं पर पीछे से पड़ने लगी थीं और इससे उनके शरीर चमकने लगे थे।

मोहन ने दूरबीन उठाकर चीते के सिर पर फोकस किया। इससे चीता अचानक इतना नज़दीक दिखने लगा कि वह डर से घबरा गया। चीता मुड़ा और बिना किसी डर के उत्सुकता और शंका से सीधा मचान पर तथा लेंसों पर देखने लगा। इस प्रकार मोहन चीते के आमने-सामने था।

मुद्रक जे. के. ऑफसैट प्रिन्टर्स, रोहतक रोड, नांगलोई, दिल्ली-110041